



---

## **Prabhat Khabar's Senior Journalist Rajeev Pandey Received 'Laadli Media Award' | Jharkhand | 25 Oct 2023**

### **Why In News?**

Recently, Rajiv Pandey, a senior journalist of Prabhat Khabar's Ranchi unit, has been awarded the 'Laadli Media Awards 2023' by 'Population First', a prestigious organization working in the field of gender equality.

### **Key Points:**

- The Laadli Media Award is given by the 'Population First' organization for promoting gender sensitivity. The Laadli media award was announced by the organization on October 21 this year.
- More than 850 journalists from across the country in 13 languages had submitted entries for the award, out of which 87 were selected and felicitated by the jury members. Apart from these, 31 journalists were given jury commendation letters.
- Prabhat Khabar has received the award at the 13th Laadli Media and Advertising Award for Gender Sensitivity (Regional) 2023 organized by Population First Organization. Last year, another journalist of Prabhat Khabar, Guruswaroop Mishra, was also honoured with the award.
- He received the award for a story on domestic workers titled 'Poor condition of domestic workers, no leave and no proper wages' published by Rajiv Pandey, chief correspondent of Prabhat Khabar Ranchi unit.
- The vice-chancellor of Baba Amte Divyang University, Jaipur, Prof. S.K. Singh was also present on the occasion. Dr Dev Swarup, Head of Policy and Partnerships, United Nations Population Fund, Jaideep Biswas, Programme Management Specialist, UNFPA, Anuja Gulati, Programme Management Specialist and Kalyan Singh Kothari, Secretary, Lok Samvad Sansthan felicitated Pandey.
- It is worth mentioning that Rajiv Pandey has already been given three fellowship awards by Chennai-based institute REACH. In the year 2014, Jharkhand has received fellowships on the status of TB disease, non-communicable diseases in the year 2019 and diabetes in the year 2023.

//



# घरेलू कामगारों की स्थिति खराब, न छुट्टी और न उचित मेहनताना

**राज्यीय संघ** रांची  
**झारखंड** में घरेलू कामगारों में 70% को मासिक में मात्र 3,000 रुपये और 10% को अधिकतम 4,000 रुपये का वेतनमान मिलता है, बाकी 20% कामगार 2000 रुपये में भी काम करने को विवश हैं। घरेलू कामगारों में 40.9% शिक्षित हैं, बाकि अक्षरज्ञा झारखंड एंटी ट्रेडिफिकिंग नेटवर्क और स्पार्क संघों द्वारा 'झारखंड के घरेलू काम करनेवालों की स्थिति' पर रिपोर्ट गढ़े वर्ष में मिली है।  
**68.6% को खास में घर दिन की मिलती है छुट्टी** : रिपोर्ट में बताया गया है कि 40.9% में 13.1 को शिक्षण और पढ़ना आता है, जबकि 22.6% ने पंचवर्षी तक, 3.6% ने मीट्रिक और 1.5% ने इंटरमीडिएट को पढ़ाई पूरी की है, कम वेतन और शिक्षित होने के

बाद भी 68.6% को मासिक में मात्र चार दिन की छुट्टी मिलती है, अन्य सप्ताहिक अवकाश और एंटीमेंट के अनुसार छुट्टी लेते हैं, 50%से अधिक घरेलू कामगार रोजगार का भोजन ( उनके द्वारा से जगमग ) अपने निवेशक के घरो में खाते हैं, लेकिन वहां के किचन भी व्यंजन का उपभोग नहीं करते हैं, घरों पर फेडरल उनको खाना भी खाना पढ़ते हैं, वहां कुछ तो आर्टमेंट को खींचने के बचे खा लेते हैं, अगर इनके अधिक पालू को बाला को जाते, तो लगभग 85% घरों में काम करनेवालों का कच्चा घर है और अलग किचन नहीं है, इनके अलावा उनको घरे के हिसाब कुर्यां के पाने पर आंशिक पाना पढ़ते हैं, उनके कच्चे करने के समय बा भी अक्षरज्ञा किचन मचा है, जिसमें 47.6% आंगन नहीं कर पाते हैं,

### झारखंड एंटी ट्रेडिफिकिंग नेटवर्क और स्पार्क की सर्वे रिपोर्ट

- 70%** को महीने में मात्र ₹3,000
- 10%** को महीने में ₹4,000
- 20%** को महीने में ₹2,000 से भी कम मिल रहे हैं

- 40.9%** घरेलू कामगार शिक्षित
- 59.1%** घरेलू कामगार अशिक्षित पाये गये

**67% के पास राइडकिल और 10 % के पास टेलीविजन**  
 रिपोर्ट की मने तो घरेलू कामगारों की संवर्ग भी संतोषदा नहीं है, 67 फीसदी के पास राइडकिल, 8 फीसदी के पास प्रेसर कुकर, 34 फीसदी के पास रेडियो, 10 फीसदी के पास टेलीविजन और लगभग 6 फीसदी के पास मिजती के पड़े हैं, इन्हीं समझौता स्थिति भी बेहतर नहीं है, डेन, बिजली और शौचालय की सुविधा भी ठीक से नहीं मिलती है, इन्हीं आठ 81.8 फीसदी कम करने और 10.2 फीसदी कृषि से होती है, वहीं 1.5 फीसदी के पास व्यवसाय और 6.6 फीसदी के पास आय के अन्य स्रोत हैं,

**झारखंड के घरेलू काम करने वालों की स्थिति पर हुई चर्चा**  
 झारखंड एंटी ट्रेडिफिकिंग नेटवर्क और स्पार्क संघों द्वारा 'झारखंड के घरेलू काम करने वालों की स्थिति' पर चर्चा की गयी, कटौतवादी स्थिति टोल कोरल डिस में अवैधता इस कार्यक्रम में समाजिक कार्यकर्ता लक्ष्मीनारायण राहु ने कहा कि अनुसूचित जातिये व जनजातिये के उद्बन्ध के हिसाब सशक्ती और गैर सशक्ती संस्थानों को मिलकर काम करना होगा, अतिरिक्त इंडिया की सभना सुनिने ने कहा कि डोमरेटवर्क वर्कसें अब अपने समस्याएं लेबर पुलिस अथवा सशक्ती संस्थानों के पास जाओं तो उन्हें बंद समस्याओं का समाधान करना पड़ता है, कई बार उनके ही बचन पर सवाल उठाया जाता है, और फरक मसुदा ने कहा कि इन्हे मस्य की जरूरत है,